International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 349-350

अर्थशास्त्र एवं अभिज्ञान शाकुंतलम में राजस्व के सिद्धांत

डॉ. दया शंकर तिवारी
एसोसियट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद पी.जी.कालेज, इलाहबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

धार्मिक कार्य–वैदिक ग्रन्थों में राजा के धार्मिक कार्यों का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में विभिन्न प्रकार के संस्कारों, स्वाध्याय, सन्ध्या–पूजन, बलि, यज्ञ, विद्वान ब्राह्मणों को दान आदि राजा के धार्मिक कार्य माने गए हैं मनुस्मृति में कहा गया है कि राजा के उदार संरक्षण में विभिन्न प्रकार के यज्ञ होते हैं जिसके परिणामस्वरूप राजा को दीर्घायु, समृद्धि एवं भूभाग की प्राप्ति होती है। कालिदास ने राजा के धार्मिक कार्यों का उल्लेख मिया है। रघुवंश में राजा दिलीप के सम्बनध में कहा गया है, वशिष्ठ और अरून्धती के चरणों की वन्दना करने के उपरान्त, सन्ध्या–पूजन–सांध्यं च विधिं करते हैं। रघु, राजा दिलीप के अश्वमेध यज्ञ के सम्बन्ध में, इन्द्र से कहते हैं कि यज्ञ का भाग सबसे पहले आपको मिलता है, यदि आप ही यज्ञ में विध्न उत्पन्न करेंगे तो संसार से धर्म का नाश हो जायेगा। राजा दिलीप को निन्यानबे यज्ञों को करने वाला कहा गया है। रघुवंश में इच्छवाकु वंशीय राजाअें के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है कि वृद्धावस्था में वे जंगल में जाकर तपस्या करते हैं। राजा रघु विश्वजित यज्ञ में अपना सब कुछ दान कर देते हैं। राजा दशरथ सन्तान की प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ,– पुत्रीयामिष्टिमृत्विजः करते हैं। रघुवंश में राजा द्वारा किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के धार्मिक कर्मकाण्ड का उल्लेख मिलता है–पिंडादान, अग्निहोत्र। इसी प्रकार कालिदास ने पुन्सवन, जात कर्म, उपनयन जैसे धार्मिक संस्कारों का उल्लेख किया है। राजा शुभमुहूर्त में युद्ध के लिए प्रस्थान करते हैं। विक्रमोवर्शीय नामक ग्रन्थ में राजा द्वारा सूर्य की उपासना–सूर्यस्योपस्थान, जप, सन्ध्या–सन्ध्याजाप्यं। इसी प्रकार राजा द्वारा किए जाने वाले नैमिषेय यज्ञ का उल्लेख विक्रमोवर्शीय में मिलता है। आभिज्ञानशाकुन्तल में वर्णन मिलता है कि पुरूवंशी राजा युवा अवस्था में पृथ्वी का भोग करते हैं तथा वृद्धा अवस्था में अपनी पतिव्रता पत्नी के साथ वन में जाकर तपस्या करते हैं। शाकुन्तल में राजा द्वारा सुपात्र ब्राह्मणों को दिए जाने वाले दान का उल्लेख किया गया है– शोभनो ब्राह्मण इति कलयित्वा राज प्रतिग्रहोदत्तः। इस प्रकार कालिदास ने माना है कि राजा विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्य करते हैं। विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में राजाअें में व्याप्त धर्म–भावना का उल्लेख किया है राजा सर्वार्थसिद्ध प्रजाजनों के कष्टों को ध्यान में रखते हुए तपोवन–तपोवनाय में चले जाते हैं। इसी प्रकार राजाओं द्वारा किए जाने वाले पिता को–श्राद्धतर्पण–निवापांजलिः का उल्लेख मिलता है। मुद्राराक्षस में ब्राह्मणों को दिए जाने वाले दान का उल्लेख मिलता है। विशाखदत्त ने राजाओं द्वारा शुभ मुहूर्त में विजय के लिए प्रस्थान करने का वर्णन किया है। आर्थिक कार्य–राजय में शान्ति, व्यवस्था और न्याय की स्थापना तथा प्रजा के कल्याण एवं विकास कार्यों के लिए धन की आवश्यकता होती है अतः राजा का यह कर्तव्य होता है कि वह धन का अर्जर करे। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत सर्वप्रथम आर्थिक क्षेत्रों में राजा के महत्वपूर्ण कर्तव्यों का विशद्रूप में उल्लेख मिलता है। कौटिल्य का मत है कि राजा के समस्त कार्य कोष पर निर्भर करते हैं अतः राजा का कर्तव्य है कि वह कोष का संचय करे– कोशमूलाः कोशपूर्वाः सर्वारम्भाः। समात्वर्पूव कोशमवेक्षेत। मनुस्मृति में कहा गया है कि राज्य का कोश एवं शासन राजा पर निर्भर रहता है। कामन्दक का मत है कि यह लौकिक प्रसिद्धि है कि राजा कोश पर निर्भर है। कालिदास ने कोश को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना है–सोडर्थमसक्तः। रघुवंश में राजाओं के सुदृढ़ कोश का उल्लेख मिलता है। कोश की रक्षा करने के लिए कोशपात्र तथा राजा के अपने कर्मचारी होते हैं। रघुवंश में राजकोश को सैकड़ों खच्चरों एवं ऊँटों पर लादकर ले जाने का उल्लेख मिलता है। राजा के कोश में चौदह करोड़ स्वर्ण मुदाओं का वर्णन किया गया है–कोटिश्चतस्त्रोदशं। आभिज्ञानशाकुन्तल में अमात्य द्वारा धन की गणना का उल्लेख किया गया है–अर्थजातस्य गणनाबहुलतयैकमेव। विशाखदत्त ने विपुल सम्पत्ति के स्वामी नन्दों का उल्लेख किया है जिनके राजकोष में निन्यानवे सौ करोड़ मुद्राओं के संग्रह का पता चलता है। गौतम धर्मसूत्र में कहा गया है कि राजा साधाणतया उपज का छठां भाग ले सकता है। कौटिल्य एवं मनु ने इस बात का उल्लेख किया है कि राजा प्रजा की रक्षा के बदले उपज का छइं भाग–धान्यषडभागं7करके रूप में प्राप्त करता है। कालिदास ने रक्षा के बदले राजा द्वारा लिए जाने वाले कर का उल्लेख किया है। आभिज्ञानशाकुन्तल में कहा गया है कि राजा दुष्यन्त अपने निर्वाह हेतु अपने द्वारा रक्षित भूमि की उपज का छठां भाग कर के रूप में प्राप्त करते हैं[1]–षष्ठांशवृतेरपि। रघुवंश में राजा अतिथि के सम्बन्ध में कहा गया है कि चारों वर्णों एवं आश्रमों से रक्षा के बदले वे छठां भाग कर के रूप में लेते हैं–षडंशभाक्। मुद्राराक्षस में चाणक्य और चन्दनदास के मध्य वर्णित तर्क–वितर्क से यह संकेत मिलता है कि राजा प्रजा की रक्षा करने के कारण कुछ धन कर के रूप में ग्रहण करता है।

भूमिकर के अतिरिक्त जल एवं थल मार्ग से होने वाले व्यापार से राजा को प्रचुर मात्रा में धन प्राप्त होता है। कौटिल्य ने आयात निर्यात पर लगने वाले कर का उल्लेख किया है। कालिदास ने विक्रमोवर्शीय में नैगमाः, मालविकाग्निमित्र में वर्णित और आभिज्ञानशाकुन्तल में सार्थवाह तथा श्रेष्ठी शब्द का प्रयोग किया है, जो निरन्तर स्थल तथा जल मार्ग से व्यापार करते हैं। विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में नदियों एवं समुद्रों का वर्णन अक्षयनिधि के रूप में किया है तथा समुद्र को तैरकर पार करने का दोभ्यां प्रतीर्णडर्णवः उल्लेख किया है जिससे प्रतीत होता है कि व्यापारी जल मार्ग से व्यापार करते हैं। इसके अतिरिक्त विशाखदत्त ने आभूषणों का व्यापार करने वाले वणिकों का उल्लेख किया है–वणिरभ्यः क्रयादधिगतः। अतः जल एवं थल मार्ग से होने वाला व्यापार आय का एक साधन है।

कौटिल्य ने मादक द्रव्यों से प्राप्त होने वाले कर को आय के साधन

के रूप में उद्धृत किया है। मदिरालयों का उल्लेख मिलता है। आभिज्ञानशाकुन्तल में वर्णन मिलता है कि राजपथ के किनारे मदिरालय सामान्यतः देखे जाते हैं। रघुवंश में मदिरापान का उल्लेख मिलता है। अतः यह नहीं कहा जा सकता है कि आय के एक बड़े साधन को कर मुक्त रखा गया होगा जबकि कर से तपस्वी लोग भी मुक्त नहीं हैं। विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में मद्यपान का उल्लेख किया है– स्त्रीमद्यमृगयाशीलौ।

भूमि कर के अतिरिक्त राज्य के आय के साधनों के रूप में खानों का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य का मत है कि कोश खानों पर निर्भर है। कौटिल्य के अनुसार कृषि, पशु पालन तथा वाणिज्य मिलकर वार्ता कहलाते हैं यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अन्म, पशु, स्वर्ण व बन जात वस्तुएँ और निःशुल्क श्रम देने वाले हैं। वार्ता के द्वारा प्राप्त कोश तथा सैन्य बल ही राजा को शक्ति सम्पन्न करता है। कालिदास ने रघुवंश में सेतु निर्माण, कृषि, पशुपालन तथा हाथी पकड़ना राजा के एकाधिकार के अन्तर्गत माना है जिनसे राज्य को आय की प्राप्ति होती है–सेतुवार्तागजबन्धुमुख्यै। रघुवंश में राजा अतिथि के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है कि वे खानों से रत्न, खेतों से अन्य तथा वनों से हाथियों को प्रापत करते हैं।– खनिभिः सुषुवे रत्नं क्षेत्रैः सस्यं बनैर्गजान्।

मालविकाग्निमित्र में खानों से निकलने वाली मणियों का उल्लेख मिलता है। विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में अश्व, गज, कृषि तथा बहुमूल्य रत्नों का उल्लेख किया है जिनको आय का साधन माना है।

संदर्भ

1. गौतमधर्मसूत्र 8:8, आपस्तम्ब धर्मसूत्र 1:1:1:9, वशिष्ठ धर्मसूत्र 4:1 ऋग्वेद0 2:23:1
2. कौ0 1:6, 1:5, 4:3
3. मनु0 7:136
4. रघु0 2:23
5. रघु0 3:44, 3:45, 14:87, 17:76
6. रघु0 3:69
7. रघु0 3:70 मुनिवनतरूच्छायां देव्या, 8:11, 8:22
8. रघु0 5:1, 5:31, नृपोडर्थिकामादीधिकप्रदश्घ, रघु0 17:72
9. रघु0 10:4
10. रघु0 8:86, 8:25
11. रघु0 3:33, 3:28, 3:29, 3:10
12. रघु0 4:26
13. विक्रमो0 पृ0 117 अंक 2
14. विक्रमो0 अंक 3 पृ0 136
15. विक्रमो0 5:8
16. शाकु0 6:20
17. शाकु0 अंक 6 पृ0 68
18. मुद्रा0 अंक 2 पृ0 180, तपस्विन पर्वतेश्वरे
19. मुद्रा0 अंक 4:5
20. मुद्रा0 अंक 1 पृ0 109 ब्राह्मणानां प्रतिपादयामीति
21. मुद्रा0 4:20